इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली (**IIIT-DELHI**) ने अपने थर्ड दिल्ली डिजिटल कॉन्क्लेव (**DDC**) की मेजबानी की।

नई दिल्ली: 13 दिसंबर 2021: इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली (आईआईआईटी-दिल्ली) ने आज अपने थर्ड दिल्ली डिजिटल कॉन्क्लेव (DDC) की मेजबानी की। इस संगोष्ठी का विषय था- एक सस्टेनेबल शहरी भविष्य (DDC'21) के लिए जलवायु परिवर्तन के लिए कार्रवाई। DDC का उद्देश्य नई प्रौद्योगिकियों, स्थिरता और जलवायु परिवर्तन के लिए कार्रवाई के बारे में चर्चा करने के लिए एक सार्वजनिक मंच प्रदान करना है, ताकि हम अपने सस्टेनेबल विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के प्राप्त कर सकें।

इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC) की नवीनतम रिपोर्ट में भविष्यवाणी की गई है कि मानवीय गतिविधियों की वजह से होने वाले जलवायु परिवर्तन के प्रभाव अपरिवर्तनीय हैं और इसके लिए तत्काल वैश्विक सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है। एंथ्रोपोसिन के युग में जो लोग सबसे अधिक प्रभावित होंगे, उन्होंने वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों की वृद्धि में सबसे कम योगदान दिया है। जलवायु कार्रवाई को SDGs में से एक के रूप में अपनाया गया है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और अनुकूल बनाने की जरूरत है। और यह नई तकनीकों और नीति निर्माण में बदलाव की मदद से ही संभव है।

"एक सस्टेनेबल शहरी भविष्य के लिए जलवायु परिवर्तन के लिए कार्रवाई" विषय के साथ, जलवायु परिवर्तन पर बातचीत के लिए एक ठोस नीतिगत रूपरेखा के रूप में जलवायु कार्रवाई पर विचार-मंथन करते हुए दो विशिष्ट प्रश्न उठाए गए थे:

- शहरी योजना और नीति निर्माण में जलवायु परिवर्तन और सामाजिक स्थिरता को कैसे एकीकृत किया जाए?
- क्या सस्टेनेबल शहरी भविष्य की योजना बनाने में डिजिटल हस्तक्षेप को एकीकृत किया जा सकता है?

उद्घाटन सत्र में आईआईआईटी-दिल्ली के निदेशक प्रो. रंजन बोस, ने जलवायु परिवर्तन अनुकूलन नीतियों में प्रौद्योगिकी संस्थानों की भूमिका पर जोर दिया।

डायलॉग एंड डेवलपमेंट कमीशन ऑफ दिल्ली के उपाध्यक्ष, जैस्मीन ने जलवायु परिवर्तन और संबंधित नीति निर्माण से संबंधित जिन समस्याओं का सामना दिल्ली कर रही है, उन चुनौतियों के बारे में बात की। श्री शाह ने दावा किया कि दिल्ली में 70 प्रतिशत प्रदूषण बाहरी कारणों से है। उन्होंने दिल्ली सरकार की नीतियों और कार्यों पर भी प्रकाश डाला। इलेक्ट्रिक व्हीकल पोलिसी 2020 और सौर परियोजना जैसी कुछ योजनाओं को शामिल किया गया है।

ग्रेजुएट स्कूल ऑफ एशियन एंड अफ्रीकन एरिया स्टडीज, क्योटो विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर, रोहन डिसूजा ने कहा "जलवायु परिवर्तन को लेकर राजनीति और सत्ता के इर्द-गिर्द जो अज्ञानता है, वह हमें संकट के निदान और प्रतिक्रिया से दूर ले जा सकती है। उदाहरण के लिए, जब परिवहन को एक सामाजिक-राजनीतिक चिंता की बजाय, एक समस्या के रूप में देखा जाता है, तो इसका समाधान पार्किंग, अधिक सड़कों आदि के रूप में देखा जाता है। लेकिन जब हम इसे एक दुर्दशा के रूप में देखते हैं, तो प्रतिक्रिया या समाधान के रूप में बहुत सारे पहलू सामने निकल कर आते हैं। "

ये कॉन्क्लेव , डिजिटल तकनीक और सार्वजनिक नीति पर काम करने वाले पेशेवरों, शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों के साथ-साथ छात्रों और जलवायु कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध व्यक्तियों को एक मंच पर एक साथ लेकर लाया हैं। इस कार्यक्रम में कई विशेषज्ञ, नीति निर्माता और शिक्षाविदों ने भाग लियाः-

· जैस्मीन शाह - उपाध्यक्ष, डायलॉग एंड डेवलपमेंट कमीशन ऑफ दिल्ली

· एम्बेसडर श्याम सरन - पूर्व विदेश सचिव; वरिष्ठ सदस्य और सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च में प्रबंधक निकाय के सदस्य

· डॉ चित्रा वेंकटरमणी - सहायक प्रोफेसर, NUS, सिंगापुर

· डॉ. प्रकाश कशवान - प्रोफेसर, यूनिवर्सिटि ऑफ कनेक्टिकट, यूएसए

· डॉ. कासिया पापरोकी - प्रोफेसर, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, यूके

· डॉ. हिता उन्नीकृष्णन - न्यूटन इंटरनेशनल फेलो (ब्रिटिश अकादमी), शेफ़ील्ड अर्बन इंस्टिट्यूट

· श्री सोहेल हाशमी - इतिहासकार, फिल्म निर्माता और लेखक

पूर्व विदेश सचिव; वरिष्ठ सदस्य और सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च में प्रबंधक निकाय के सदस्य श्याम सरन ने कहा, "अगर चीजों को बदलना है, तो हमें इस मुद्दे का सामना करना होगा कि हम मनुष्य और

प्रकृति के बीच के संबंध को कैसे देखते हैं। हमें अपनी परंपराओं की तरफ वापस जाना होगा जहां प्रकृति हमारी मां है, हमें प्रकृति को संजोना है न कि उसे जीतना है, जो एक पश्चिमी अवधारणा है। “

जिन विषयों पर चर्चा की गई. उनमें से कुछ हैं:

· शहरी स्थिरता और शासन

· जलवायु कार्रवाई पर चर्चा में सामुदायिक और सामाजिक समानता

· स्थिरता और प्रौद्योगिकी

· जलवायु न्याय के लिए स्थानीय और वैश्विक सक्रियता

ऑनलाइन कार्यक्रम के अलावा, जलवायु परिवर्तन और पृथ्वी के भविष्य के विषय पर एक कला प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। जिसमें स्थानीय कलाकारों, अतुल भल्ला, रवि अग्रवाल, गिगी स्कारिया ने पारिस्थितिकी और पर्यावरण के बड़े विषय पर अपना काम प्रस्तुत किया। हमारे पास मद्रास की एक चित्रकार आफरीन फातिमा भी थीं, जिन्होंने दीवार पर एक "भित्तिचित्र" डिजाइन किया था, जिसमें आयोजन दल ने जलवायु कार्रवाई के स्थानीय मुद्दों से संबंधित हैशटैग एकत्र किए थे।

सादर

अर्पित शर्मा